Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

पाठ्यक्रम निर्माण में शोध की प्रासंगिकता

डॉ0 संतोष कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा–संकाय
आर0आर0पी0जी0कॉलेज, अमेठी

शोध सारांश

पाठ्यक्रम किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था का दर्पण होता है। इसे देखने मात्र से ही पता चल जाता है कि उस देश की न केवल शिक्षा व्यवस्था अपितु हर व्यवस्था किस रूप में चल रही है। पाठ्यक्रम के गहन विश्लेषण से पता चल जाता है कि उस समाज या देश जिसमें वह लागू है, उसकी आवश्यकता क्या है, उसका सम्पूर्ण विकास के प्रति नजरिया कैसा है तथा वह राष्ट्र किस ओर बढ़ रहा है। ऐसी परिस्थिति में पाठ्यक्रम निर्माण में व्यापक शोध की आवश्यकता पड़ती है। पाठ्यक्रम में शोध उसके नीति–निर्माण में, विश्लेषण में, अनुप्रयोग में तथा मुल्यांकन आदि क्षेत्रों में होता है। इन क्षेत्रों में निरपेक्ष शोध करके तथा समाज की आवयकताओं के शोध उसका सामंजस्य स्थापित करके ही एक उत्कृष्ट पाठ्यक्रम बनाया जा सकता है। जहाँ तक निरपेक्ष एवं प्रभावशाली शोध का प्रश्न है तो वह तभी सम्भव है जब पाठ्यक्रम निर्माण के समय अच्छे उद्देश्य तथा समावेशी व्यवस्था को ध्यान में रखकर उचित उपागम के साथ शोध किया गया हो। जिससे कि देश–काल के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था बन सके।

lमलूवतक. ***पाठ्यक्रम में शोध ।***

पाठ्यक्रम निर्माण में शोध की प्रासंगिकता

- डॉ0 संतोष कुमार सिंह

प्रस्तावना :–

पाठ्यक्रम किसी भी शिक्षण प्रणाली का सबसे प्रमुख अंग है। सम्पूर्ण शिक्षण की प्रक्रिया पाठ्यक्रम के द्वारा ही निर्धारित एवं निर्देशित होती है। दूसरे शब्दों में हम कहें तो क्या पढ़ाना है? किसे पढ़ाना है? कितना और कैसे पढ़ाना है? आदि प्रश्नों के उत्तर हमें पाठ्यक्रम से ही प्राप्त होते है। इन प्रश्नों की निःतार्थता पर हम गौर करें तो ऐसे में स्पष्ट हो जाता है कि एक प्रभावशाली पाठ्यक्रम हीं शिक्षाव्यवस्था के सम्पूर्णतंत्र को एक सूत्र में बांधे रख सकता है।

जहाँ तक शिक्षा व्यवस्था का प्रश्न है तो यह वास्तविक रूप से किसी भी समाज का दर्पण होती है। जैसा समाज होगा, वैसा ही देश होगा। क्योंकि एक देश कई समाजों को मिलाकर बनता है। अतः शिक्षा व्यवस्था ही किसी देश का वास्तविक रूप दिखलाती है। जॉन डीवी ने शिक्षा को एक त्रिमुखी प्रक्रिया बताया है जिसके तीन अंग हैं छात्र, शिक्षक एवं पाठ्यक्रम। उन्होंने स्पष्ट तौर पर बताया कि पाठ्यक्रम का निर्माण समाज की आवश्यकता के अनुसार ही होता है।

किसी भी काल का समाज हो, उसमें परिवर्तन लगातार होता रहता है। इसी परिवर्तन के कारण समाज की आवश्यकताएँ भी लगातार बदलती रहती हैं। वर्तमान में समाज को किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है? भविष्य में शिक्षा की क्या मांग होगी? जैसे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम में निरन्तर शोध की आवश्यकता होती है। जिससे की एक ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण हो जो वास्तविक तौर पर शिक्षातंत्र को प्रभावशाली बना सके।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षा व्यवस्था में प्रभावशाली पाठ्यक्रम का महत्वः–

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो वास्तविक रूप से एक सामान्य मानव को मानव संसाधन बनाती है। जब मानव, मानव संसाधन बनता है तो वह वास्तविक रूप से केवल अपना हीं नही अपितु अपने सम्पूर्ण देश का आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास का मार्ग प्रसस्त करता है। ऐसे में मानव को मानव संसाधन बनाने वाली प्रभावशाली शिक्षातंत्र की भी आवश्यकता उभर कर सामने आती है। जहाँ तक प्रभावशाली शिक्षातंत्र का प्रश्न है उसे प्रभावशाली बनाने का कार्य उसका पाठ्यक्रम ही करता है।

एक प्रभावशाली पाठ्यक्रम अपने आप में व्यापक होता है। उसमें अतीत के अनुभव, वर्तमान की आवश्यकता एवं भविष्य की प्रासंगिकता तीनों छिपी रहती है। तीनों पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। जिस किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था सकारात्मक दिशा में होगी वहाँ की हर एक व्यवस्था सकारात्मक होगी। जहाँ तक माना जाता है कि एक पाठ्यक्रम समाज की वर्तमान आवश्यकता को प्रतिबिम्बित करती है तो ऐसी परिस्थिति में एक प्रभावशाली पाठ्यक्रम निश्चित रूप से समाज की आवश्यकताओं को न केवल पूर्ण करता है अपितु उसके आवश्यकताओं का परिमार्जन भी करती है।

शिक्षा व्यवस्था में प्रभावशाली पाठ्यक्रम का महत्व इस बात से भी है कि एक अच्छा पाठ्यक्रम निश्चित रूप से बाल मनोविज्ञान के समस्त मानकों को पूरा करता है। यदि कोई पाठ्यक्रम बाल मनोविज्ञान के समस्त मानकों को पूरा करता है तो इससे बालक में सम्पूर्णता का विकास होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो एक अच्छे पाठ्यक्रम का सीधा प्रभाव अधिगम तथा शिक्षण दोनों पर सकारात्मक रूप में पड़ेगा।

पाठ्यक्रम में शोध एवं उसका क्षेत्र :–

पाठ्यक्रम मूलरूप से शिक्षा व्यवस्था एवं समाज के बीच कड़ी का कार्य करता है अतः निरन्तर परिवर्तनशील समाज के लिए पाठ्यक्रम में भी निरन्तर बदलाव की आवश्यकता होता है। जहाँ तक शोध का प्रश्न है तो वह तभी होती है जब हमारे सामने समस्या हो या आवश्यकता में अवरोध हो तभी शोध कार्य प्रारम्भ होता है। एक परिवर्तनशील समाज में नित् नये बदलाव होते रहते हैं जिसमें नवीन उपागम जुड़ते हैं तो कुछ पुरातन उपागम अलग होते हैं। इन परिस्थितियों में नवीन उपागम के साथ ताल–मेल बैठाने तथा पुरातन उपागम के साथ अलगाव करने के लिए हमें अनुसंधान की आवश्यकता पड़ती है ठीक इसी प्रकार से पाठ्यक्रम के निर्माण में भी अनुसंधान की आवश्यकता होती है।

पाठ्यक्रम सम्बन्धी शोध कार्य बहुआयामी होना चाहिये जो लगभग पाठ्यक्रम के प्रत्येक पहलु को अपने में समाहित करता हो। इस बहुआयामी शोध कार्य की प्रकृति को मुख्य रूप से पांच भागों में बांटा जा सकता है जिसे हम पाठ्यचर्चा सम्बन्धी शोध कार्य की संरचना भी कहते हैं।

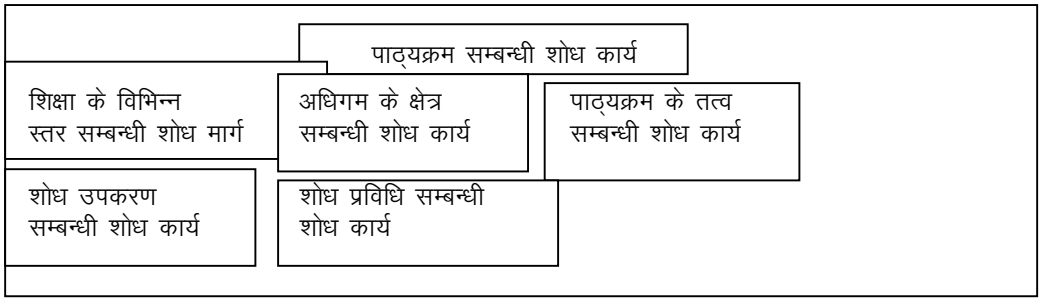

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाठ्यक्रम के संबंध में शोध अपने आप में एक व्यापक पद है। जिसके अन्तर्गत मुख्यतः पाठ्यक्रम के प्रस्ताव, क्रिया–कलाप या उसके परिणाम द्वारा जनित समस्याओं को समझने में शोध तकनीकों/प्रविधियों के अनुपयोग आदि समाहित होते हैं। जहाँ तक पाठ्यक्रम में शोध के अतीत का प्रश्न है तो प्राचीनकाल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में गुरु तत्कालीन आवश्यकता पर स्वयं अनुसंधान कर पाठ्यक्रम निर्धारित करते थे। नवीन रूप से पाठ्यक्रम में शोध का औपचारिक उदय 19वीं शताब्दी में अमेरिका में हुआ था। जबकि इसका प्रथम प्रारूप 1927 ई0 में अमेरिका शिक्षा के अध्ययन के लिए बनी राष्ट्रीय सोसाइटी के एक समिति द्वारा इयरबुक के रूप में तैयार किया गया।

पाठ्यक्रम के शोध में मूलरूप से पांच तत्वों पर ध्यान दिया जाता हैः–

1. समाज को किस प्रकार के पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।
2. पाठ्यक्रम में अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के साथ ताल–मेल बैठाया गया है या नहीं।
3. पाठ्यक्रम में बाल मनोविज्ञान के विषयवस्तु का ताल–मेल किस रूप में बैठाया गया।
4. पाठ्यक्रम में शिक्षा के किस–किस समकालीन मुद्दों को रखा जाय।
5. पाठ्यक्रम किस रूप में राष्ट्र के लिए कल्याणकारी हो।

जहाँ तक पाठ्यक्रम में शोध के क्षेत्र का प्रश्न है तो उसे भी चार बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

1. पाठ्यक्रम निर्माण की नीति संबंधी शोध।
2. पाठ्यक्रम विश्लेषण संबंधी शोध।
3. पाठ्यक्रम प्रारूप, अनुपयोग एवं क्रियात्मक शोध।
4. पाठ्यक्रम मूल्यांकन।

1. पाठ्यक्रम निर्माण की नीति संबंधी शोधः–

शिक्षा प्रणाली में नीति, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों के मध्य घूमती रहती है। यह मूर्त एवं अमूर्त तथ्यों तथा केन्द्रीय एवं परिधीय तथ्यों के मध्य घूमती रहती है। व्यवहारिक तौर पर देखा जाय तो सबसे पहले नीति संबंधी कार्य होता है क्योंकि इससे पता चलता है कि हम किन–किन आवश्यक मुद्दों के आधार पर शोध कर अपने पाठ्यक्रम का निर्माण करें।

2. पाठ्यक्रम विश्लेषण सम्बन्धी शोधः–

पाठ्यक्रम संबंधी शोध का एक क्षेत्र पाठ्यक्रम प्रस्ताव का विश्लेषण करना भी है। मूलरूप से वह समकालीन सत्तारूढ़ राजनीति से प्रेरित भी होता है। कई बार देखा गया है कि जो पाठ्यक्रम लागू है उस पर एक गुप्त पाठ्यक्रम का प्रभाव भी रहता है। यह गुप्त पाठ्यक्रम मूलरूप से सत्तारूढ़ दल के विचारधारा के अनुसार होता है। अतः विश्लेषण संबंधी शोध पाठ्यक्रम प्रस्ताव के तार्किक या अनुभाविक अध्ययन की बात करता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि किस प्रकार समकालीन विचाराधारा के प्रभाव को कम करके एक बेहतर पाठ्यक्रम बनाया जाय।

3. **पाठ्यक्रम प्रारूप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोधः**–

यह शोध मूलरूप से पाठ्यक्रम के व्यवहारिक पक्षों पर होता है। इस क्षेत्र में पाठ्यक्रम की दिशा एवं दशा तय करके, उसके अनुप्रयोग पर विचार किया जाता है। इसके बाद उस पाठ्यक्रम का अनुप्रयोग किस ओर हो इस पर क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है ताकि पाठ्यक्रम के द्वारा तात्कालिक एवं भविष्य की समस्याओं को समाप्त किया जा सके। पाठ्यक्रम के अनुप्रयोग संबंधी शोध की प्रवृत्ति, नवाचार के समाजशास्त्र तथा समाज मनोविज्ञान के आधार पर समूह बनाने की है। इसे किसी भी शिक्षण संस्थान की केश स्टडी रूप में भी किया जा सकता है। जहाँ तक क्रियात्मक अनुसंधान का प्रश्न है तो इसमें शोधकर्ता पाठ्यक्रमों के प्रभाव का स्वयं अनुभव करता है।

4.पाठ्यक्रम मूल्यांकन :–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यह शोध सबसे महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम मूल्यांकन के लिए शोध कार्य में अतीत तथा वर्तमान के पाठ्यक्रमों के बीच सार्थकता देखी जाती है। इसके अलावा इसमें यह भी देखा जाता है कि क्या पाठ्यक्रम का प्रारूप, उसका अनुप्रयोग, उसकी उपादेयता उचित है या नहीं। इसमें पाठ्यक्रम के भविष्य में पड़ने वाले प्रभाव को भी परखा जाता है।

निष्कर्षः–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पाठ्यक्रम किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है। यह समाज तथा देश के समस्त रूपों को प्रदर्शित करता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस विचार धारा या आवश्यकता पर देश विकसित होता है उसी को उसका पाठ्यक्रम प्रदर्शित करता है। इन परिस्थितियों में प्रभावशाली पाठ्यक्रम निर्माण के लिए शोध की प्रासंगिकता काफी बढ़ जाती है। यह शोध मूलरूप से पाठ्यक्रमों की प्रचलित आवधारणा को समकालीन एवं नवीन रूप प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम संबंधी शोध पाठ्यक्रम में व्याप्त नकारात्मक तत्वों का परिमार्जन भी करता है।

एक प्रभावशाली पाठ्यक्रम वही होता है जो भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों की आवश्यकताओं तथा प्रासंगिकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया हो। अतः इन परिस्थितियों में यह कहा जा सकता है कि जब तक पाठ्यक्रम निर्माण में उत्कृष्ट तथा निरपेक्ष शोध नहीं होगा तब तक पाठ्यक्रम उत्तम नहीं बन सकता है। प्रभावशाली पाठ्यक्रम निर्माण में शोध के क्षेत्र स्पष्ट होने चाहिये ताकि उपयुक्त विषय के चुनाव के साथ–साथ देश काल के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था बने।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुप्ता, डॉ0एस0पी0(2016) : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा प्रकाशन, प्रयागराज।
2. चौबे, डॉ0 सरयू प्रयास एवं अखिलेश (2002) : शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय आधार, इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाऊस, मेरठ।
3. त्यागी, गुरु शारदा दास एवं अन्य (2005) : शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. मदान पूनम (2014) : उदीयान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
5. लाल, रमण बिहारी (2004) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।
6. शर्मा, आर0ए0 (2011) : अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
7. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप (2002) : शिक्षा सिद्धान्त, आर0 लाल बुक डिपों, मेरठ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies